

पञ्चम पाठः रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत-

- | | |
|--|---|
| (i) छात्रों को ध्यान से कार्य करना चाहिए। | छात्राः ध्यानेन कार्यं कुर्युः। |
| (ii) वृक्ष पर पक्षी चहचहाते हैं। | वृक्षे पक्षिणः कूजन्ति/कलरवं कुर्वन्ति। |
| (iii) हम सब मिलकर गाएंगे। | वयं मिलित्वा गास्यामः। |
| (iv) खिलाड़ी फुटबॉल से खेल रहे हैं। | क्रीडकाः पादकन्दुकेन क्रीडन्ति। |
| (v) अध्यापक ने कहा- “सदाचार का पालन करो।” | शिक्षकः उवाच- सदाचारं पालयत। |
| (vi) कृषक गाँव की ओर गए। | कृषकाः ग्रामं प्रति गतवन्तः। |
| (vii) तुम दोनों खीर खाओ। | युवां पायसं खादतम्। |
| (viii) विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं। | विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। |
| (ix) माता बालक को दूध देती हैं। | माता/जननी बालकाय दुग्धं ददाति। |
| (x) हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए। | अस्माभिः स्वास्थ्यनियमाः पालनीयाः। |
| (xi) कल राघव कहाँ था? | हयः राघवः कुत्र आसीत्? |
| (xii) मेरे पिता भोजन पकाते हैं। | मम पिता/जनकः भोजनं पचति। |
| (xiii) मेरे पास आकर बैठो। | मम पार्श्वं सीदन्तु। |
| (xiv) उन सबको दीवाली उत्सव अच्छा लगता है। | तेभ्यः दीपोत्सवः रोचते। |
| (xv) ईश्वर को नमस्कार। | ईश्वराय नमः। |
| (xvi), घर के बाहर कौन है? | गृहस्य बहिः कः अस्ति? |
| (xvii) भवन के ऊपर कौए बैठे हैं। | भवनस्योपरि काकाः सीदन्ति। |
| (xviii) मैंने ऐसा नहीं कहा। | अहमेवं न उक्तवान्। |
| (xix) कक्षा में कितने छात्र हैं? | कक्षायां कति छात्राः सन्ति। |

(xx) तुम बाज़ार से दही लाओ।

त्वम् आपणात् दधिमानय।

2. प्रत्ययाधारिता वाक्य संरचना

गुरुं सेवमानेन छात्रेण या विद्या अर्जिता सा पूर्णजीवने तस्य सहायिका भूतवती । जीवने ज्ञानमेव सर्वथा प्राप्तव्यम् यतः ज्ञानं विना न कोऽपि पूजनीयः।

अत्र स्थूलाक्षरपदानि प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।

वाक्येषु प्रत्यय- प्रयोगार्थम् एते बिन्दवः ध्यातव्याः।

- शतृ-प्रत्ययस्य प्रयोगः परस्मैपदिधातुभिः सह भवति। शानच् प्रत्ययस्य प्रयोगः आत्मनेपदिधातुभिः सह भवति। आभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।
- क्त-क्तवतु-प्रत्यययोः प्रयोगः भूतकालार्थं क्रियते। क्त-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भाववाच्ये च भवति। क्तवतु-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्तृवाच्ये एव भवति।
- तव्यत्-अनीयर्-प्रत्यययोः प्रयोगः विधिलिङ्लकारस्य अर्थं भवति। एताभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः क्रियारूपेण विशेषणरूपेण च भवति।
- भवन्तः एतेषां प्रत्ययानां विशिष्ट अध्ययनम् अग्रिमेषु अध्यायेषु करिष्यन्ति।

एतानि वाक्यानि पठत-

1. मित्र की सहायता करनी चाहिए।	मित्रस्य सहायता कर्तव्या।	A friend should be helped.
2. उसने क्या कहा?	सः किम् उक्तवान्?	What did he say?
3. मैंने उसे धन दिया।	मया तस्मै धनं दत्तम्।	I gave him money.
4. कार्य के करते हुए ही सब साध लेते हैं।	कार्यं कुर्वन् एव सर्वं साधयामः।	Everything is achieved by doing practice.
5. यह चलचित्र भूलने योग्य नहीं है ।	इदं चलचित्रम् अविस्मरणीयम् न अस्ति।	This movie is unforgettable
6. बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णता को पाता है।	वर्धमानः चन्द्रः पूर्णतां याति।	The rising moon attains completion.

3. एतेषां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत-

(i) उसने पत्र लिखा।

सः पत्रं लिखितवान्।

(ii) खाते हुए नहीं बोलना चाहिए।

खादन् न वक्तव्यम्।

(iii) उस कन्या ने पुस्तक पढ़ी।

तया कन्यया पुस्तकं पठितम्।

(iv) तुम्हें भी पुस्तक पढ़नी चाहिए।

युष्माभिरपि पुस्तकं पठनीयम्।

(v) वह फल लेकर घर आई।

सा फलमादाय आगता।

(vi) तुमने ऐसा नहीं सोचा।

त्वया एवं न विचारितम्।

(vii) पुस्तक पाता हुआ छात्र प्रसन्न होता है।

पुस्तकं लभमानः छात्रः मोदते।

www.ncertsolutionhub.in

- (viii) जाते हुए बालक को देखो।
(ix) शिमला नगर देखने योग्य है।
(x) खाने योग्य भोजन ही खाना चाहिए।

- गच्छन्तं बालकं पश्यतु।
शिमला-नगरं दर्शनीयम्।
1. खायं भोजनमेव खादनीयम्।
2. भोज्यं भोजनमेव खादनीयम्।

